

श्रीगुरुय न्माः इली द्वादसवी
शुली ॥ प्रथमं भस्मना मानी
॥ १ ॥ द्वितीयं यनासनी ॥ ३ ॥
चेतुर्थं आनंदरुपीनी ॥ ३ ॥ पंच
मै योगमाया ॥ ४ ॥ शषमे शदु
दर्षणीः ॥ ५ ॥ सप्तमे संतो शना
मानीः ६ ॥ आष्टमे आष्टांगयो
गद्यारीनीः ७ ॥ नवमे नीस्क
कं कनामानीः ८ ॥ दसमे दा

श्रीगुरुय न्माः इली द्वादसवी
शुली ॥ प्रथमं भस्मना मानी
॥ १ ॥ द्वितीयं यनासनी ॥ ३ ॥
चेतुर्थं आनंदरुपीनी ॥ ३ ॥ पंच
मै योगमाया ॥ ४ ॥ शषमे शदु
दर्षणीः ॥ ५ ॥ सप्तमे संतो शना
मानीः ६ ॥ आष्टमे आष्टांगयो
गद्यारीनीः ७ ॥ नवमे नीस्क
कं कनामानीः ८ ॥ दसमे दा

गुनादीनीरंजनलुस्यद्रु
॥ आर्येड आद्वैल आनदे
स्यरुनीराकारनीस्कळक
सुधलव आनीका ॥ देहीन
केरुप नहे ॥ नाम नहे मानी
का ॥ वैस्य नहे सुद्र नहे ध्येयी
नहे ब्राह्मनायालीनहे जा

लीनहे मनस्यपना ॥ ३पांडे
जनजारेजनस्यलजनआ
नीका ॥ देहीनहेरुपनहेना
मनहेमानीका ॥ वर्धनहेता
रुनेनहेसीलुबालका ॥ मंद
नहेचेतुरनहेमुडनहेआर
रुका ॥ स्त्रीनहेपुरुसनहे ॥

नहे सीनाफुसका ॥ देही नहे
रूप नहे ना मनहे मानी का ॥ ३ ॥
स्थुल नहे सुधु मन हे कार
न नहे माहाकार न नहे ॥ इंद्री
इंद्रीयादीलव्य नहे नहे सी लुची
गुना ॥ आवस्त्ता नहे भोगन
हे ॥ नह सी लुभुली का ॥ देही

नहे ॥ ४ ॥ ब्रह्मानहे वीस्त्रुन
हे रुद्र नहे मारुला ॥ इंद्र नाही
चेद्र नाही सुर्य नाही देवता ॥
रा मनाही क्रुस्त नाही नाही
आव लारी का ॥ देही नहे ॥ ५ ॥
माया नहे शक्ती नहे वुन मनी
च्या वेग का ॥ सुभ्र नहे लाबन

सुरे संवदीत ॥ देवं त्रे लोके
लोक वंदी तं हरी हरं म कं
वं दे ॥ श्री दत्तात्रेय नमस्तु ते
॥ २ ॥ ब्रह्म लोके सुभु तस्तु ते
स्व चं कम धा धरं ॥ पानी पात्रं
धरं देवं ॥ श्री दत्तात्रेय नम
स्तु ते ॥ ३ ॥ नीरमं पीत वरनं

चे सुदरं ॥ शा मसो भी तं सु लो
चे नं वी शा लक्ष्यं ॥ ४ ॥ त्री सु ल
ठ म रु मा ला ज टा मु ग ट म डी
तं ॥ म डी तं कुंड लं करनं ॥ श्री
दत्तात्रे ॥ ५ ॥ वी भु ती भु षी तं
दे हे लो र के यु र्म डी तं ॥ आ ने

न न प्रवा करं ॥ धा प्रस न वंद
ने देवं भु की मु की प्र दाय
कं ॥ जे नार धं न जे गत्र ला
॥ ७ ॥ रा जे रा जे मी ली व्या रो क
ते वी र्थ वर पदं ॥ सु भद्रो भ
द्र क न्या नो ॥ ८ ॥ आ नु स या
कर रने न आ त्री स ल सु मु

भे वं ॥ वी रा भ्या रोगी नां स
र्वे ॥ ९ ॥ दी गां वरं तनु श्रे हं ब्र
ह्म व्या री वृ ते स्थी तं ॥ हं सो हं
स आ च डी चे ॥ १० ॥ क दा या गी
क दा भो गी ॥ बाल ली ला पी शां
द चे नं ॥ क स ना मं र न प की चे
श्री दत्ता त्रे य ॥ ११ ॥ भु ल जा धा

ग्र ॥ न च त्रासो ह पीडा तथैव च ॥
दारीद्रं वे सनां ध्वसी ॥ १२ ॥ च
तु र्दस्या बु ध दी न ज न्म मार्ग
स्य रं सु भे ता कं वी पु लं वं द
॥ १३ ॥ रा तो प्र लं पा दं सर्व ती
र्थं समु भ्ने वं ॥ वं दी तां योगी
नां सर्वे ॥ श्री दत्ता त्र ये नमस्तु ते

॥ १४ ॥ ज्ञान दत्ता प्र भु साक्षी
गती र मो क्षे प्र दा ये कं ॥ आ म
भु र्द स्य रं कृ ष्ण ॥ १५ ॥ भृ गो ची
लं मां दी रं वा के द ता त्रै ये स्तु
ती परं ॥ सा धा कारं स्य चं ब्र
मं ॥ १६ ॥ प्रा नी नां सर्व जं तु नां
क र्म फा शा प्र भु ज नं ॥ दत्ता

वे त्रेस्तुतीस्तोत्रसर्वका
 मंप्रदायकं ॥१७॥ आपुत्रो
 लभेतपुत्रं धनं धान्यां ल
 समुभयवें ॥ राजमान्येभवे
 लक्ष्मी ॥ १० ॥ प्रासं लभेते नराः
 संभवं ॥ ११ ॥ त्रीसंध्यां प
 मान्येस्तुदत्तात्रेस्तुतीपरं ॥
 तस्ये रोगेभयोनास्तीदीर्घा

युवीं जयोभयंतु ॥१५॥ कृ
 स्मांडांकीनीयधेपीशां
 चे ॥ ब्रह्म राक्षे सो ॥ सुयतो
 त्रमात्रेन गंधेतीना तत्र
 संवये ॥ श्रीदत्तात्रेयनमस्तु
 ते ॥ २ ॥ इतीभुगोस्तोत्रसं
 पुर्नमस्तुते ॥ श्रीगुरुआर्पण
 देवदत्त ४४४४४४४ ॥